# श्रीविष्णु

## (अध्यात्मशास्त्रीय ज्ञान)

### भूमिका

अधिकांश लोगोंको देवतासे सम्बन्धित जो थोडा ज्ञान रहता है, वह बचपनमें पढी या सुनी कहानियोंद्वारा होता है । इस अल्प ज्ञानके कारण देवतापर विश्वास भी अल्प ही रहता है । देवतासे सम्बन्धित अधिक ज्ञान प्राप्त होनेपर अधिक विश्वास निर्मित होनेमें सहायता मिलती है । विश्वासका रूपान्तर आगे श्रद्धामें होता है। जिससे देवताकी उपासना एवं साधना भी उचित ढंगसे हो पाती है । इस दृष्टिकोणसे इस लघुग्रन्थमें श्रीविष्णुसे सम्बन्धित प्रायः अन्यत्र न पाया जानेवाला उपयुक्त अध्यात्मशास्त्रीय ज्ञान देनेपर विशेष ध्यान दिया है । श्रीविष्णुके विषयमें अधिक ज्ञान सनातनके 'श्रीविष्णु, श्रीराम एवं श्रीकृष्ण' ग्रन्थमें दिया है ।

इसे पढकर प्रत्येकको अधिकाधिक साधनाकी प्रेरणा मिले, यही श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है ।

# अनुक्रमणिका


卐 भूमिका १०

卐 परात्पर गुरु डॉ. आठवलेजी लिखित ग्रन्थों एवं लघुग्रन्थों की खरी फलोत्पत्ति ! ११

१. व्युत्पत्ति एवं अर्थ १३

२. कुछ अन्य नाम १४

३. मूर्तिविज्ञान १६

४. रूप एवं परिवार २१

५. कार्य एवं विशेषताएं २५

६. दशावतार ३१

७. निवास एवं विष्णुलोक (वैकुण्ठ) ३४

८. भारत स्थित श्रीविष्णुके प्रसिद्ध मन्दिर ३५

९. उपासना ३५